

अभ्यास -6: 12 अक्तूबर 2024 को क्लास के पहले जमा कीजिए।

1. मंगलेश डबराल की कविताओं के बारे में एक आलोचक का कहना है - 'दरअसल कविता में यह उजली और मार्मिक मनुष्यता ही वह चीज़ है जो मंगलेश डबराल को अपने समकालीनों के बीच अलग और विशिष्ट बनाती है।'

कक्षा में पढ़ी कविता के अलावा मंगलेश डबराल की और कविताएँ इंटरनेट से पढ़िए और ऊपर लिखे कथन का औचित्य (relevance) समझाइए।

2. कई बार अलग मिजाज के कवि एक जैसी बात लिखते हैं - फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ और अनुज लुगुन की नीचे लिखी पंक्तियों को पढ़ें और इनमें कही बातों में क्या एक जैसा है, इस पर चर्चा करें।

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ :

'और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा  
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा'

अनुज लुगुन :

'एक कवि अपनी प्रेमिका की गोद में लेट कर

मौसम का स्वाद ले रहा था

और उसकी कविता स्वादहीन हो गई'

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ :

'अब टूट गिरेंगी जंजीरें अब ज़िंदानों की ख़ैर नहीं (ज़िंदान = कैदखाने, जेल)

जो दरिया झूम के उठे हैं तिनकों से न टाले जाएँगे '

अनुज लुगुन :

'और कविता के शब्द जेल की अँधेरी कोठरियों को तोड़ते हैं

उसके अंदर कैद पतझड़ को विदा करने के लिए।'